International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 7, Issue 01, January 2020
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

पाली साहित्य में उल्लिखित बौद्ध संस्कृति एवं दर्शन

डॉ0 रामाकान्त राम
इतिहास विभाग,
पि० आर० आर० डी० कॉलेज, बैरगनिया (सीतामढ़ी)

सारांश

बौद्ध युग में भारतीय विचार जगत में विशेष उथल – पुथल देखने को मिलती है। सामाजिक एवं धार्मिक नवचेतना के इस युग में बुद्ध तथा महावीर सदृश महापुरुषों का इस देश में जन्म हुआ, जिन्होंने संसार को सत्य और अहिंसा का वह संदेश दिया जो भय – व्याधि से पीड़ित मानव के लिए वरदान हो गया। इस युग में कई नये मतों का प्रार्दुभाव हुआ जिन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों तथा अंधविश्वासों के प्रतिकार का मार्ग पशस्त किया। बुद्ध के समकालीन अनेक प्रमुख ब्राह्मणों ने बौद्ध धर्म को स्वीकार ही नहीं किया, अपितु इस मत के दार्शनिक आधार को सुदृढ़ बनाया। बौद्ध दर्शन इस बात पर बल देता है कि संयम के अभाव में सुखद जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। सामाजिक जीवन में प्रविष्टि संयम के बिना संभव ही नहीं है। व्यक्ति जब तक अपने हितो को मर्यादित नहीं कर सकता और अपनी आंकाक्षाओं को सामाजिक हित के लिए बलिदान नहीं कर सकता, वह सामाजिक जीवन के अयोग्य है। समाज में शांति और समृद्धि तभी संभव है, जब उसके सदस्य हितो का नियंत्रण करना सीखें। बौद्ध दर्शन का द्वितीय आर्य सत्य दुःख का मूल कारण दुःख समुदाय है। महात्मा बुद्ध के अनुसार दुःख का मूल कारण तृष्णा पुनर्भव को करने वाली आसक्ति और राग के साथ चलने वाली है। महात्मा बुद्ध तृष्णा के साथ – साथ अविद्या को भी दुःख का मूल कारण स्वीकार किया।

भारतवर्ष के इतिहास में बौद्ध युग का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस युग में भारतीय विचार जगत में विशेष उथल – पुथल देखने को मिलती है। सामाजिक एवं धार्मिक नवचेतना के इस युग में बुद्ध तथा महावीर सदृश महापुरुषों का इस देश में जन्म हुआ, जिन्होंने संसार को सत्य और अहिंसा का वह संदेश दिया जो भय – व्याधि से पीड़ित मानव के लिए वरदान हो गया। भगवान बुद्ध के संदेश उत्तुंग हिमगिरि तथा उत्ताल जलधि तरंगो का अतिक्रमण कर अनेक देशों में प्रसारित हुए। उन्होंने धार्मिक जगत को संघीय

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

जीवन पद्धति दी जिसका अवान्तरकालीन सम्प्रदायो में बड़ा प्रभाव पड़ा। इस युग में कई नये मतों का प्रार्दुभाव हुआ जिन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों तथा अंधविश्वासों के प्रतिकार का मार्ग पशस्त किया। जातिवाद का सर्वप्रथम विरोध बुद्ध तथा महावीर ने किया। इन्होंने वेद तथा ब्राह्मण की प्रभुता को भी चुनौती दी। बुद्ध तथा महावीर के धर्मोपदेश जनता की भाषा में दिये गये, अतः वे सभी के लिये बोधगम्य हो सके। ब्राह्मण ग्रंथ दुरूह होने के कारण जनता के लिए दुबोध हो गये थे। अतः नवीन विचारों का जन – मानस पर बड़ा अनुकूल प्रभाव पड़ा। भगवान बुद्ध के धर्मोपदेश का राजा तथा जनता दोनों ने स्वागत किया। बुद्ध के समकालीन अनेक प्रमुख ब्राह्मणों ने बौद्ध धर्म को स्वीकार ही नहीं किया, अपितु इस मत के दार्शनिक आधार को सुढ़ृढ़ बनाया।

बौद्ध काल का इतिहास ज्ञात करने के लिए पालि –पिटक प्रमाणिक है। इसमें कतिपय विद्वानो को सन्देश है, पर विविध दृष्टिकोणों से विचार करने पर यह ग्राहय नहीं हैं। अलिखित होने पर भी बुद्ध के प्रमुख उपदेशों को बौद्ध भिक्षुओ ने यत्नपूर्वक यथावत सुरक्षित रखा होगा इसमें संदेह का कोई आधार नहीं दिखता, क्योंकि भारत में वेद की शिक्षा मौखिक रूप में प्रदान की जाती रही है और वे उसी रूप में सहस्त्रों वर्षो तक सुरक्षित रहे। अशोक के पूर्व पालि –पिटक के प्रमुख अंशो को भी मौखिक रूप में सुरक्षित रखा गया और आवश्यकता होने पर बौद्धमत के विभिन्न विषयों के ज्ञाताओं से शंकाओं का समाधान किया जाता रहा। बुद्ध निवारण के एक शताब्दी पश्चात जब वज्जिपुत्र भिक्षुओं ने दस निषेधों का आचरण करना प्रारंभ किया, तब रेवत से पूछा गया कि वैशाली के भिक्षुओ का आचरण भगवान बुद्ध द्वारा उपदिष्ट धर्म के अनुकूल है अथवा नहीं, रेवत को धर्म विनय, आगम तथा मतिकाओ का ज्ञाता कहा गया है। प्रख्यात प्राच्यविद ओल्डेनवर्ग तथा विटरनिटस ने भी संकलन के पूर्व मौखिक रूप से पालि –पिटक के पर्याप्त अंश की विधमानता को स्वीकार किया है। यह भी उल्लेख सुलभ है कि बौद्ध भिक्षु वचनम का कंठस्थ पाठ करने वाले भिक्षु सुत्तन्तिक, धम्म का पाठ करने वाले धम्मकथिक और विनय के ज्ञाता विनयधर थे।

बौद्ध दर्शन इस बात पर बल देता है कि संयम के अभाव में सुखद जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। सामाजिक जीवन में प्रविष्टि संयम के बिना संभव ही नहीं है। व्यक्ति जब तक अपने हितो को मर्यादित नहीं कर सकता और अपनी आंकाक्षाओं को सामाजिक हित के लिए बलिदान नहीं कर सकता, वह सामाजिक जीवन के अयोग्य है। समाज में शांति और समृद्धि तभी संभव है, जब उसके सदस्य हितो का नियंत्रण करना सीखें। सामाजिक जीवन में हमें अपने हितों के लिए एक सीमा रेखा निश्चित करनी होती है हम अपने हित साधन की सीमा वहीं तक बाधा सकते है , जहाँ तक एक दूसरे के हित की सीमा प्रारंभ होती है। समाज में व्यक्ति अपने स्वार्थ की सिद्धि तभी कर सकता है जब तक उससे दूसरे का अहित न हो। इस प्रकार सामाजिक जीवन में हमें संयम का पहला पाठ पढ़ना ही होता है। मात्र यहीं नहीं वरन हमें हितों के त्याग के लिए भी तैयार होना पड़ता है। सामाजिक जीवन के आवश्यक तत्व हैः अनुशासन, सहयोग की भावना और अपने हितों को बलिदान करने की क्षमता। क्या इन सबका आधार संयम नहीं है, वस्तु स्थिति यह

है कि संयम के बिना सामाजिक जीवन की कल्पना ही संभव नहीं। संयम और मानव जीवन ऐसे घुले – मिले है कि उनसे परे एक सुव्यवस्थित जीवन की कल्पना संभव नहीं हैं।

ई० पू० छठी सदी सम्पूर्ण विश्व के इतिहास में एक महान धार्मिक आंदोलन का युग था। इस युग में भारत ही नहीं विश्व के अन्यान्य देशों में भी आध्यात्मिक एवं नैतिक अशांति हो गई। परिणामतः समस्त विश्व में समाज सुधारकों का अभ्युदय हुआ और उनके द्वारा चिन्तन किया गया। इस सभी चिन्तकों ने अपने–अपने चिन्तनों से समाज में व्यापत रूढ़िग्रस्त एवं आडम्बर व्यवस्था नामक रोग को दूर करने का प्रयास किया, जो सामान्य जन के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन को बोझिल बना दिया था। इसी समय में महात्मा बुद्ध अवतरित हुए, जिन्होंने विश्व को बौद्ध दर्शन दिया। ध्यातव्य हैं कि बौद्ध दर्शन का उदय भारत की धार्मिक क्रांति की कोई आकस्मिक घटना नहीं हैं। सदियों से जनमानस उद्वेलित हो रहा था। वैदिक धर्म यज्ञादि कर्मकांड जटिल हो गये तथा उनमे आत्म–कल्याण की भावना कम किन्तु आडम्बर अधिक बढ़ गया था। फलतः स्वयं आर्य ही अपने वैदिक धर्म की रूढ़िग्रस्त जटिल कर्मकाण्डवादिता के प्रति उद्वेलित हो चले थे। इसी समय कपिलवस्तु के शाक्य वंश में क्षत्रिय राजकुमार के प्रभाव में सिद्धार्थ का प्रादुर्भाव हुआ जो बोधिज्ञान के पश्चात गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए। अतः बौद्ध दर्शन तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था की प्रमाणिकता, धार्मिक क्रिया–विधियों, पुरोहितों की अपरिमित शक्ति, सुविधाओं तथा मरणासन्न संस्कृति के प्राणघातक भार के विरुद्ध था। डॉ० राधाकृष्णन ने भी लिखा हैं कि छठी सदी ई०पू० कई देशों में आध्यात्मिक अशांति तथा बौद्धिक हलचल के लिए प्रसिद्ध हैं। जैसे चीन में लाओजू तथा कंफ्यूशियम, यूनान में पारमेनिरिस तथा एम्पीडॉक्लास ईरान में जरथ्रुस्त और भारत में भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध हुए। महात्मा बुद्ध ने सुधारात्मक आंदोलन के रू‍प में बौद्ध धर्म को जन्म दिया और उसमे निहित ज्ञान बौद्ध दर्शन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बौद्ध दर्शन में तप ब्रह्मचर्य, आर्यसत्य का दर्शन, निर्वाण का साक्षात्कार इत्यादि उत्तम मंगल मूल बतलायें गयें हैं, जिसमे सम्पूर्ण मानव की मानवता समाहित हैं। यदपि बौद्ध मत का मूल श्रोत पालि सुत्तपिटक हैं जो पाँच निकायों–दीर्घ, मज्झिम, संयुक्त, अंगुत्तर और खुददक के रू‍प में विभक्त हैं, परन्तु ध्यातव्य हैं कि महात्मा बुद्ध ने स्वयं कोई ग्रन्थ नहीं लिखा और न अपने अनुयायी शिष्यों को ही अपने उपदेशों को किसी विशिष्ठ प्रामाणिक भाषा में स्मरण रखने के लिए ही आदेश दिया। इस दर्शन का ज्ञान अत्यंत व्यावहारिक था, क्योकि तप ब्रह्मचर्य, आर्यसत्य का दर्शन, निर्वाण का साक्षात्कार–इन सभी को मंगलदायक कहा हैं। राग, द्वेष एवं मोह को अमंगलदायक बतलाया हैं। कुशन क्या हैं, इस सम्बन्ध में धम्म पद की आर्शावानी उल्लेखित हैं–

सब्बपापस्माकरण कुशलस्य उपसम्पदा।

सच्चित परियोडंन आतां बुधन शासनं।

अर्थात अक्रोध से क्रोध को जीते, साधुता से असाधुता को जीते, कन्दर्प को दान से और मृषावादी को सत्य से जीते। बौद्ध दर्शन का यह मन्त्र मानवता के उच्चतम प्रतिष्ठा का संस्थापक हैं। मानव चार आर्यसत्य तथा अष्टांगिक मार्ग के द्वारा ही दुःखो से मुक्ति प्राप्त करता हैं। यहाँ चार आर्यसत्य हैं –दुःख, दुःख समुदाय, दुःख

निरोध तथा दुःख निरोध गामिनी प्रतिपद हैं। बौद्ध दर्शन के चार आर्यसत्यों में दुःख स्वीकार किया गया हैं। इसका तात्पर्य जीवन दुखमय हैं। जन्म भी दुःख हैं, जरा भी दुःख हैं, व्याधि भी दुःख हैं, मृत्यु भी दुःख हैं। आचार्य शंकराचार्य ने भी इसी प्रकार कहा हैं–

जन्मदुःखं जरादुःखं पुनःपुनः।
अंतकाले महादुःखं तस्मात् जग्राही –2 ।।

योगिराज भतृहरिः ने भी वैराग्यशतक में प्रतिपादित किया हैं–

भोगे रोगभयं कुलेच्युतिभयं वितेनृयालदरयम,
मने दैन्यभयं बले रिपुभयं रुपेजरायाभयाम ।
शास्त्रे वादभयं गुनेखलुभ्यं काये कृताणताद्रयम,
सर्व वस्तु भयान्वितं भुवि नृणा वैराग्यमेवभयं ।।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दुःख संसार में सर्वाधिक सत्य है और मानव जीवन का सर्वप्रथम लक्ष्य उससे मुक्ति प्राप्त करना है।

बौद्ध दर्शन का द्वितीय आर्य सत्य दुःख का मूल कारण दुःख समुदाय है। महात्मा बुद्ध के अनुसार दुःख का मूल कारण तृष्णा पुनर्भव को करने वाली आसक्ति और राग के साथ चलने वाली है। महात्मा बुद्ध तृष्णा के साथ – साथ अविद्या को भी दुःख का मूल कारण स्वीकार किया। अब यह चिंतन का विषय है कि ये दोनों जिसके पास हो, उसकी क्या स्थिति होगी। वह व्यक्ति चेतनयुक्त होते हुए भी विवेक शून्यता की स्थिति में संचरण करता है। सम्प्रति वह भौतिकवादिता को ही यथार्थ मान बैठता है और उसे सम्पूर्ण जगत सत्य प्रतिमान होने लगता है। अविद्या से आछन्न और तृष्णा से आबद्ध एक जन्म से दूसरे जन्म को दौड़ते हुये जीवों की पूर्व कोटि पता नहीं चलती है एतादृशः अवातवेदान्ती आचार्य शंकराचर्या ने भी कहा

पुनरपि जनन पुनरपि मरणं पुनरपि जठरे शयनीयम।
कृप्यापारे पाहि मुरारेः भज गोविन्द भज गोपाला।

महात्मा बुद्ध को दुःख का कारण अविधा से माना है। अविधा बुराई कैसे उतपंन्न करती है। यदि हम एक बार उत्पत्ति की इस प्रक्रिया को जान लें तो उसका जो फल होता है उससे बचने के राजयोग को हम पकड़ लेंगे। महात्मा बुद्ध स्वयं इसके उदाहरण हैं और इनका दर्शन सार तट से निर्वाण के तट तक ले जाने वाला एक सेतु हैं।

आज पूरे संसार में तृष्णा, घृणा, ईष्या का दुःख फैला हुआ है। प्रेम दया का नाम नहीं है। यदि बुद्ध के दिये गये उपदेशों का पालन करें तो जीवन के दुःखो से छुटकारा पाया जा सकता है और संसार में शांति बनी रहेगी।

संदर्भ सूचि :–

1. डॉ ० राधाकृष्णन , फारवर्ड टू 2500 ईयरस ऑफ बुद्धिजम , पृ ० 1
2. डॉ ० निशिकांत दत्त , द ऐज ऑफ इम्पेरियल युनिटी , पृ ० 370
3. धम्मपद 14 / 5
4. संयुक्तनिकाय , धम्म चक्कपवतनसुत , 2 / 9
5. आचार्य शंकराचार्य अधयातवेदान्त
6. भर्तृहरि वैराग्यशतकम 31
7. संयुक्तनिकाय , धम्म चक्कपवतनसुत ,
8. डॉ ० एम ० हिरियन्ना , भारतीय दर्शन की रुपरेखा ,पृ ० 150
9. आचार्य शंकराचार्य अधयातवेदान्त
10. नागार्जुन – मध्यमकारिका – 11 / 1
11. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, पृ ० 72